R. A. N. M.'s High School (Malal)
LIBRARY

समाज विकासमाला

तेल की कहानी

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

Thel ki kahani. Acc 2475/72
Story
Yeshpal Jain

समाज-विकास-माला : ३७

तेल की कहानी

R.B.A.N.M'S. LIBRARY
B'lore-42
Accession No: 4160
U.D.C. No: 8-3=914.3(KUL)N57
Date; 14-3-83
R.B.A.N.M'S. HIGH SCHOOL LIBRARY
Accn No 2084
Sec. No. H.J. 88
BANGALORE
Acc 2407/72
H/2948 13.1.77
Acc 2407/72

लेखक
कुलभूषण

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५७
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

2351
015 2,3
N57

दूसरी बार : १९५७
मूल्य
छः आना 37 N.P

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स
दिल्ली

S.B.A.N.M'S. HIGH SCHOOL LIBRARY
Accn No ....
Sec. No ....
BANGALORE

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

दूसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का दूसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

पाठकों से

बहुत से घरों में रोशनी के लिए मिट्टी का तेल इस्तेमाल होता है और उसके नाम को छोटे-बड़े सब जानते हैं। लेकिन यह तेल कहां से निकलता है, कैसे तैयार होता है, किस-किस काम में आता है, इसकी जानकारी बहुत कम लोगों को है।

इस किताब में तेल की कहानी दी गई है। इसे पढ़कर आपको बहुत-सी नई बातें मालूम होंगी। कहानी इतने अच्छे ढंग से कही गई है कि सब आसानी से समझ सकते हैं।

आप इस कहानी को पढ़ें और अपने संगी-साथियों को भी सुनावें।

—सम्पादक

तेल की कहानी

: १ :

बंबई शहर की बात है। शाम का समय। बनिये की दूकान।

रामू ने आकर कहा, "साहजी, एक बोतल मिट्टी का तेल देना।"

चंदू साह ने रामू से बोतल ले ली।

रामू के साथ उसका बेटा बिशन था। वह बोला, "बाबा, मिट्टी का तेल? क्या मिट्टी से भी तेल निकलता है?"

चंदू साह बोतल भर रहे थे। बोले, "हां बेटा, मिट्टी से भी तेल निकलता है।"

पास ही खाट पर धन्नू बैठा बीड़ी सुलगा रहा था। बिशन से बोला, "बेटा, बंबई शहर में रहते हो। इतना भी नहीं जानते!"

बिशन ने कहा, "नहीं, धन्नू काका।"

धन्नू काका बोले, "चंदू साह, लड़का क्या पूछ रहा है? उसे बता दो।"

चंदू साह बोले, "एं-एं . . . निकलता तो मिट्टी से है . . . पर . . ."

"पर क्या, साहजी ?" बिशन ने कहा।

"पूछकर बताऊंगा, बेटा।" चंदू साह ने बोतल रामू को पकड़ाकर पैसे लेते हुए कहा।

अगले दिन राघो दुकान पर आया। मिट्टी के तेल की हाथगाड़ी रोककर बोला, "राम-राम, साहजी ! तेल लोगे ?"

साहजी खाता लिख रहे थे। चश्मा उतारकर बोले, "नहीं राघो, तेल नहीं लेना।" तभी उनको कुछ याद आगया। बोले, "अरे हां, राघो भैया, यह तो बता कि यह घासलेट---मिट्टी का तेल---सचमुच मिट्टी से निकलता है क्या ?"

राघो ठहरा अनपढ़। मुश्किल से उसे इतना याद रहता है कि दो गैलन गज्जूदादा को दिया, पांच गैलन अहमदभाई को। तीन दिन की बढ़ी दाढ़ी को खुजाकर बोला, "मिट्टी का तेल ? घासलेट ?" और फिर वह मुस्करा उठा। चुटकी बजाकर बोला, "घासलेट---घास से निकलता होगा ?"

चंदू साह ने कहकहा लगाया। बोले, "वाह भाई राघो ! तुमने तो कमाल कर दिया। इतना भी नहीं

जानते। अच्छा, अपने डिपो से पूछना। समझे?"

राघो ने डिपो से पूछा। डिपोवाले ने गोदामवाले से पूछा। गोदामवाले ने कारखानेवाले से पूछा। होते-होते बात बड़े साहब के पास पहुंची।

और आखिर एक दिन चंदू साह को बुलावा आया। तेल कैसे बनता है—आकर कारखाने में देखिए।

चंदू साहू को और क्या चाहिए? नई उजली धोती बांधी। चश्मा नाक पर चढ़ाया। चप्पल पहनी और चल पड़े।

कारखाने के बाहर बहुत से लोग जमा थे, कोई तीस-चालीस। राघो भी था। डिपोवाला भी।

साहजी कारखाना पहली बार देख रहे थे। राघो से बोले, "बाप रे बाप! कितनी बड़ी-बड़ी चिमनियाँ हैं!"

राघो ने कहा, "हां! और कितने मोटे-मोटे पाइप हैं। साफ़ और चमकीले!"

उनके चारों तरफ़ अलुमिनियम की पालिश वाली बड़ी-बड़ी गोल टंकियां थीं। इतनी ऊंची कि चार आदमी एक-पर-एक चढ़ जायं, तो भी सिरे पर न पहुंचें। चारों तरफ़ से बंद। जगह-जगह उनमें पाइप लगे हुए थे।

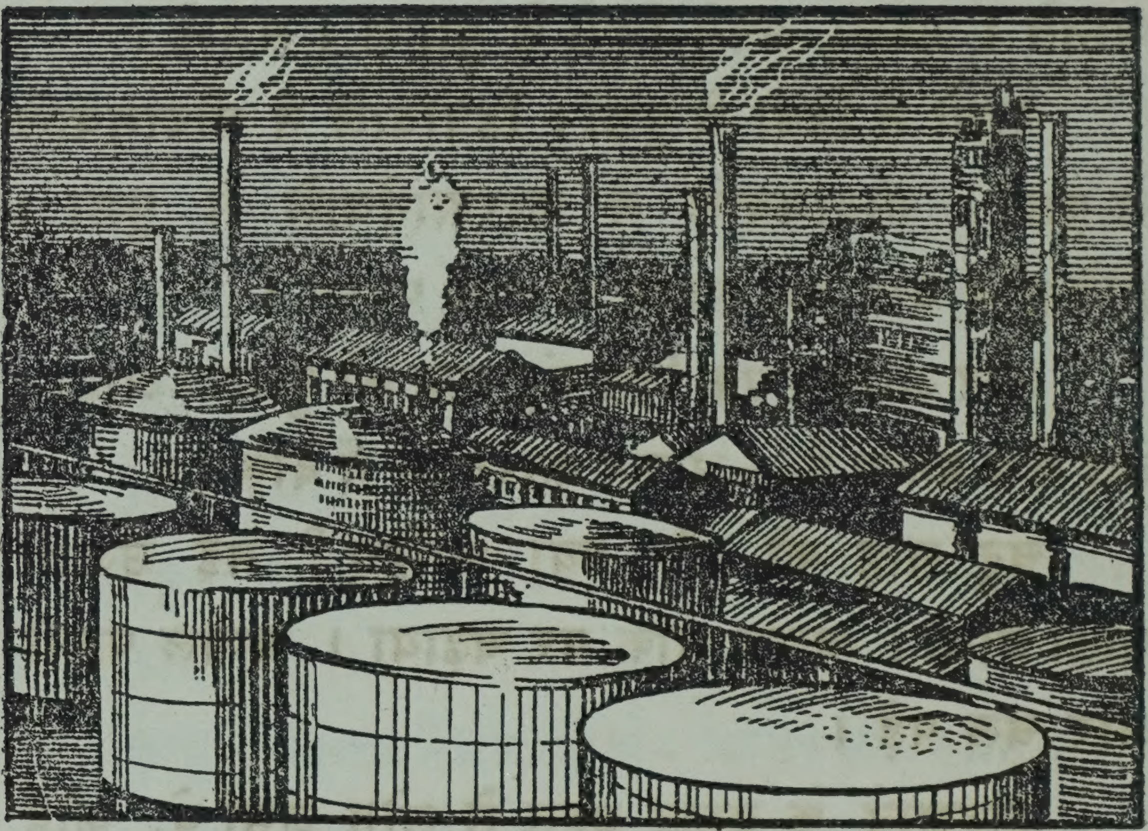

तेल का कारखाना

"ये क्या हैं ?" साहजी ने राघो से पूछा।

"शायद इनमें तेल है।" राघो ने कहा।

इतने में एक आदमी उनकी तरफ़ आया, बढ़िया सूट पहने और सिर पर टोपी लगाये।

उसने सब लोगों से कहा, "आइए, इधर चले आइए।"

कुछ दूरी पर एक तिमंजिला मकान था, बड़ा शानदार। सब उसी तरफ़ चले।

अंदर पहुंचे तो राघो ने साहजी की तरफ़ देखा। बाहर गरमी थी, अंदर ठंड। साहजी ने सिर हिलाया,

"भई, है यह शानदार चीज।"

सूट और टोपीवाले बाबू ने कहा, "दियासलाई और सिगरेट अंदर नहीं जा सकते। जिनके पास हों, यहां रख दें। लौटते समय ले लें।"

"यह क्यों ?" चार-पांच लोगों ने एक साथ पूछा।

"यह तेल का कारखाना है।" बाबू ने कहा। "तेल बहुत जल्दी जलता है। एक चिनगारी से आग लग सकती है। सारा मकान जलकर राख हो सकता है।"

सबने चुपचाप दियासलाइयां और बीड़ियां निकालकर मेज पर रख दीं।

अब वे एक बड़े कमरे में पहुंचे। बीच में कुर्सियां लगी थीं। एक तरफ़ पर्दा टंगा था।

राघो ने कहा, "अरे साहजी, फिल्म !"

"हां।" साहजी बोले।

कुछ ही देर में सब बैठ गए और पर्दे के सामने बाबू खड़ा हो गया। उसने कहना शुरू किया--

"आप लोग जानना चाहते हैं कि पेट्रोल कैसे बनता है ? मिट्टी का तेल कहां से आता हैं ? मशीन का तेल कहां से निकलता है ? ये तीनों चीजें एक ही चीज में से निकलती हैं। यह चीज पेट्रोलियम के नाम से पुकारी जाती है। यह जमीन के अंदर से निकलती है। कैसे

निकलती है, यह आप फ़िल्म में देखेंगे।"

कुछ देर रुककर बाबू फिर बोला—

"तेल बहुत जरूरी चीज है। तेल न हो तो कपड़े के कारखाने न चल सकें। आटे की चक्की न चल सके। मोटरें न चल सकें। हवाई जहाज न चल सकें। गांव के घरों में लालटेनें न जल सकें।"

एक आदमी बोल उठा, "लालटेनें नहीं तो मोमबत्ती सही!"

बाबू मुस्करा उठा। बोला, "आप शायद जानते नहीं। मोमबत्ती भी पेट्रोलियम से बनती है।

"मगर कारखाने तो बिजली से चलते हैं।" एक आदमी ने कहा।

"जी हां, लेकिन मशीनों में तेल न दें तो वे एक बित्ता भी न हिल सकें।" बाबू ने कहा। "आपने काला-काला तेल तो देखा होगा। यह तेल लोहे की मशीनों में लगाया जाता है। इससे लोहा कम घिसता है और मशीन तेज चलती है। अब आप देखिए, पेट्रोलियम कैसे निकलता है?"

इतना कहकर बाबू पर्दे के सामने से हट गया। रोशनी बुझ गई। फ़िल्म शुरू हुई। जंगलों और पहाड़ों की तसवीरें पर्दे पर आईं, साथ ही एक आवाज ने

कहना शुरू किया—

"लाखों-करोड़ों बरसों से जमीन पर जीवन रहा है। जंगल रहे हैं। पहाड़ और नदियां रहे हैं। जमीन उलटती-पलटती रही है। बड़े-बड़े जानवर रेंगते, लड़ते, मरते रहे हैं। जंगल दबते रहे हैं। पहाड़ उभरते रहे हैं।

"इसी उथल-पुथल से जमीन के अंदर एक चीज पैदा हुई—पेट्रोलियम। बहुत दबाव से पेड़-पौधे और समुद्री जानवर जमीन के नीचे दब गए। उनमें कीड़े पैदा हुए। गर्मी से वे पिघल गए और तेल बन गए।

यह तेल चट्टानों के नीचे देर तक दबा रहा। मगर एक दिन चट्टान टूट गई। तेल बह निकला। ज़मीन पर बसनेवाले आदमियों ने इसे देखा। उन्होंने सोचा, यह क्या है? मगर उनकी समझ में कुछ न आया।

"तब एक दिन एक आदमी आग लेकर इस तेल के पास आया। आग और तेल मिले। आग भड़क उठी!

"बस, आदमी को तेल के इस्तेमाल का पता लग गया।

"आज से पांच हजार साल पहले, आदमी इस तेल से मशालें जलाते थे—बेबिलोन में, सिंध नदी की घाटी में, चीन में।

"मगर यह तेल अपने आप बाहर निकला हुआ तेल था। यह जंगलों में और नदियों के किनारे मिलता था। आदमी ने इसे चट्टानों में से नहीं निकाला था।

"सबसे पहले चीन के लोगों ने जमीन में से तेल निकालना शुरू किया। नमक की तरह वे तेल को भी जमीन में से निकालने लगे। मगर उनके कुएं बहुत छिछले थे। जहां तेल जमीन के पास होता, निकल आता। मगर गहरा पहुंचना चीनियों के बस का काम न था और ज्यादातर तेल गहरी जगह ही से निकलता है।

"१८५७ में हमारे देश में गदर हुआ। उसी वर्ष यूरोप के देश रूमानिया में तेल का पहला गहरा कुआं खोदा गया। इसी समय आसाम में भी तेल की खानों का पता चला। इसके दो साल बाद अमरीका में ५९ फुट गहरा कुआं खोदा गया। इसे खोदनेवाले का नाम था कर्नल ड्रेक।

"कर्नल ड्रेक ने मामूली औजारों से कुआं खोदा था। मगर देखते-देखते तेल की मांग बढ़ी। साथ ही तेल निकालने के नये ढंग निकले। आज दस हजार फुट--यानी दो मील--गहरे कुएं भी हैं, जिनमें से तेल निकाला जाता है।

"ये कुएं कैसे होते हैं ? आइए, देखिए।

"यह पेट्रोलियम के कुओं का एक नगर है। ओह, चारों तरफ़ ये क्या चीजें हैं ? ऊंचे-ऊंचे मस्तूल ! जैसे

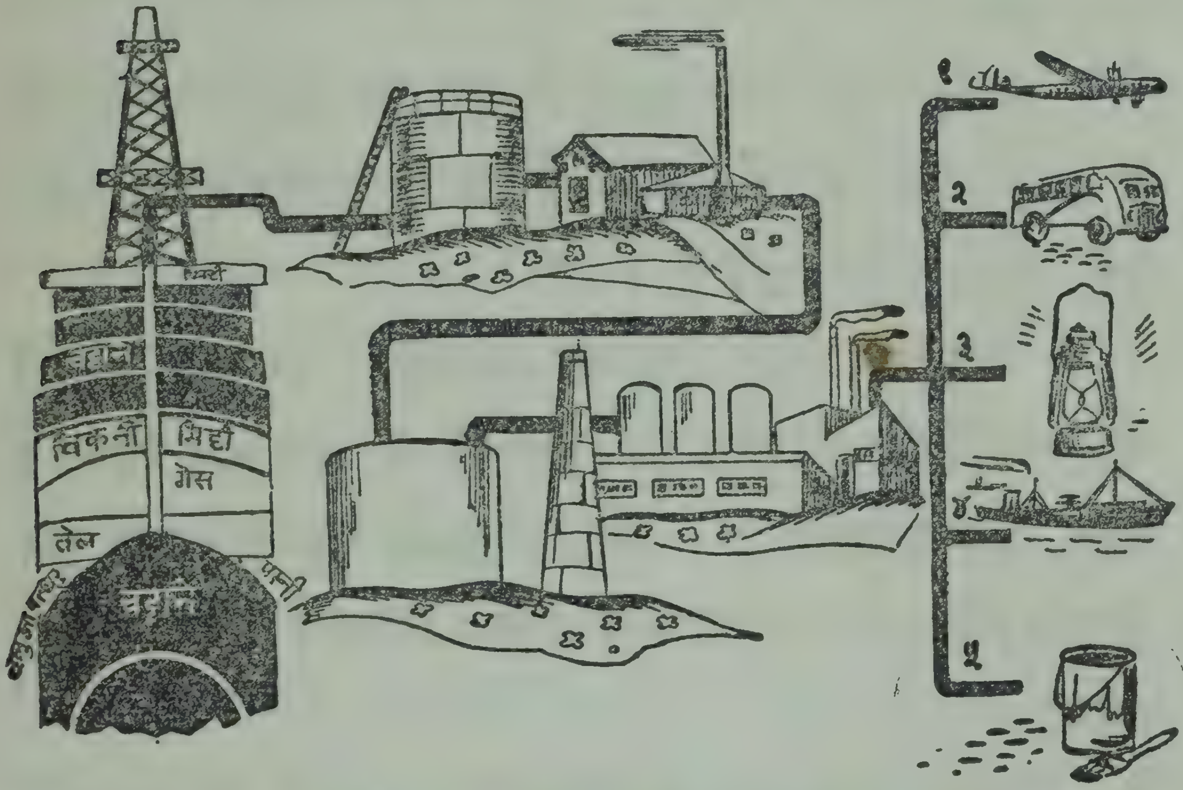

तेल को धरती में से लेकर काम लाने तक की क्रियाएं

बिजली ले जानेवाले खंभे हों ! मगर ये उनसे कहीं बड़े हैं, ऐसे ऊंचे कि आसमान से बातें करते मालूम होते हैं।

"मगर नहीं। ये आसमान से नहीं, जमीन से बातें करते हैं। इन मस्तूलों से कुएं खोदने के औज़ार जमीन के अंदर ठोके जाते हैं। लोहे के औज़ार जमीन के अंदर धंसते जाते हैं और मिट्टी को बाहर फेंकते जाते हैं।

"ये आदमी क्या कर रहे हैं ? मिट्टी की जांच कर रहे हैं । देख रहे हैं कि इस मिट्टी में तेल के आसार हैं या नहीं ? अरे, इनके चेहरे तो खुशी से चमक उठे ! बात क्या है ?

"कुछ नहीं, तेल मिल गया । वे बाहर भाग रहे हैं । खोदनेवालों से कह रहे हैं कि होशियार हो जाओ। तेल ज्यादा दूर नहीं है ।

"ओहो ! वाह, तेल का फव्वारा निकल पड़ा। लो, लोगों ने इसे कुछ ही मिनटों में बंद कर दिया । वाह, तेल निकला है । मेहनत सफल हुई है। अब इस तेल से टंकियां भरी जायंगी। पैसा आयगा। काम आगे बढ़ेगा ।

"मगर क्या सब कुओं में से तेल नहीं निकलता ? नहीं। पहले जमीन की जांच होती है। औजारों से देखा जाता है कि यहां पेट्रोलियम हो सकता है कि नहीं । फिर कुएं खोदे जाते हैं। दस कुएं खोदे जायं तो एक में से तेल निकलता है। बाकी कुएं सूखे निकलते हैं ।

"तेल का कुआं खोदना आसान नहीं है । एक कुआं खोदने में कई महीने, कई साल लग जाते हैं । फिर भी अगर तेल न निकले, तो कितनी निराशा होती होगी !

"मगर निराशा का नाम न लो। ये टंकियां भर रही हैं।

"ज़मीन सोना उगलती है। गेहूं की बालियां ज़मीन का सोना हैं, मगर यह काला तेल भी सोने से कम नहीं है। आज का संसार मशीनों पर टिका है, मशीनों के लिए तेल सोने से भी बढ़कर है।

"काला तेल पाइप में से टंकी में जा रहा है। काला तेल ! पेट्रोलियम ! संसार का चमत्कार !"

: २ :

फ़िल्म ख़त्म हो गई। आवाज़ चुप हो गई। कमरे में फिर बत्तियां जल उठीं।

चंदू साह ने आंखें मलीं। चश्मा ठीक किया। बोले, "तेल इतना काला होता है, यह मुझे मालूम नहीं था।"

बाबू फिर पर्दे के सामने आ खड़ा हुआ। बोला, "पेट्रोलियम की शक्ल काली होती है। बाहर जो बड़ी-बड़ी टंकियां हैं, उनमें ऐसा ही तेल है। काले तेल को इस कारखाने में साफ़ करते हैं। कैसे करते हैं, यह आप खुद देख लीजिए। आइए।"

बाबू के पीछे-पीछे सब बाहर निकल आये। बाहर कितनी गर्मी थी ! कारखाने से कुछ दूर सबको रोक-

कर बाबू ने कहा, "दाएं हाथ की टंकियों में पेट्रोलियम भरा है। यह ईरान से आया है।"

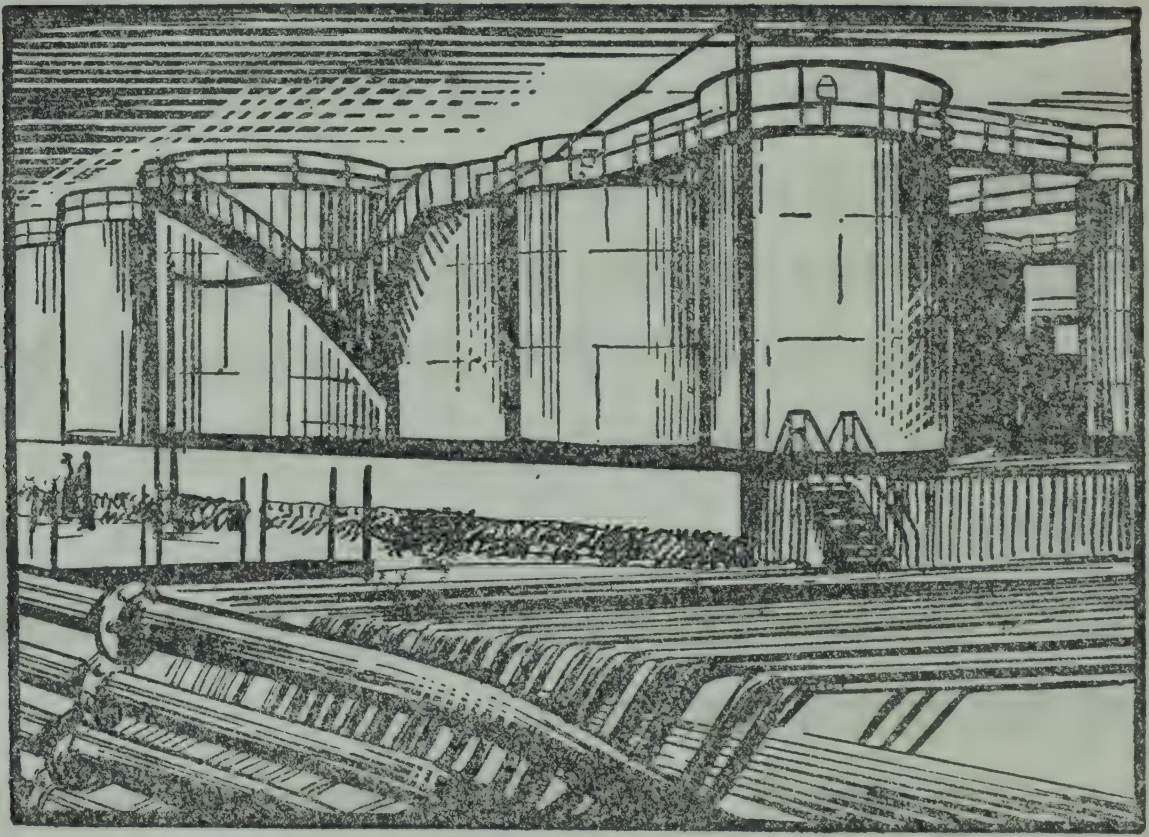

तेल की टंकियां

एक दुबले-पतले आदमी ने कहा, "बाबूसाहब, क्या हमारे देश में यह तेल नहीं होता ?"

बाबू ने कहा, "होता है। आसाम में माकुम नाम की एक जगह है। वहां पहला कुआं कोई ९० साल पहले सन् १८६७ में खोदा गया था। यह कुआं ११८ फुट गहरा था। एशिया में पेट्रोलियम का यह पहला कुआं था।"

"ओहो ! तब तो हमारा देश पीछे नहीं रहा।"

दुबले आदमी ने खुश होकर कहा।

बाबू ने कहा, साठ साल हुए, डिगबोई में तेल साफ़ करने का कारखाना खुला था। वह कारखाना आज भी काम कर रहा है।

सबके चेहरे खुशी से चमक उठे, एक आदमी बोला, "तो फिर ईरान से क्यों मंगाते हैं ?"

बाबू बोला, इसलिए कि हमारे देश में तेल कम होता है। हमें जरूरत ज्यादा की है। ईरान से जो तेल आता है, वह जहाजों में भरकर आता है। जहाज यहां से लगभग चार मील दूर समुद्र में खड़े होते हैं। वहां से पाइप के रास्ते तेल इन टंकियों में आ जाता है।"

"पर बाबूजी, सामने तो पानी है। पाइप कहां है।" राघो ने पूछा।

"पाइप पानी के नीचे हैं।" बाबू ने जवाब दिया।

"वाह !" साहजी बोल उठे।

"हां, तो जब तेल इन टंकियों में भर जाता है तो कारखाने में इसे साफ़ करते हैं।"

राघो बेताब हो रहा था। बोला, "तेल की सफाई दिखाओ, बाबूजी। कारखाना दिखाओ।"

बाबू एक पल मुस्कराया। बोला, अभी दिखाता हूं। आपने अर्क बनते हुए तो देखा होगा। एक बर्तन में

पानी उबालते हैं। पानी में वह चीज डाल देते हैं, जिसका अर्क निकालना होता है। गुलाब की पत्तियाँ, सौंफ़, अजवाइन या कोई और चीज। पानी उबलता है तो भाप निकलती है। इस भाप को एक नली से दूसरे बर्तन में ले जाते—हैं। इस दूसरे बर्तन के चारों तरफ ठंड रहती है। बस, ठंड से भाप फिर पानी बन जाती है। यही पानी अर्क कहलाता है। कोई बीमार हो तो उसे वैद्य लोग यही अर्क देते हैं। यही तरीका पैट्रोलियम की सफाई का भी है। पुराने जमाने में छः टंकियों के तरीके से पेट्रोलियम की सफाई करते थे। ये छः टंकियां ऐसे रखते थे कि एक टंकी का तेल दूसरी टंकी में बह सके। पहली टंकी सबसे ऊपर। दूसरी उसके नीचे। इसी तरह अंत में छठी टंकी। पहली टंकी का तेल कम गर्म करते थे। दूसरी का पहली से ज्यादा। इसी तरह छठी का सबसे ज्यादा। इस तरह की भाप का जो अर्क निकलता था, वही पेट्रोल और मिट्टी का तेल होता था।

"मगर टंकियों के तरीके से बहुत कम तेल बनता था और देर से बनता था। सो धीरे-धीरे नए तरीके निकाले जाने लगे।

"आजकल इन टंकियों का काम एक बड़ी चिमनी

से लिया जाता है। कच्चे तेल को पाइप के रास्ते इस बड़ी चिमनी के नीचे लाते हैं। रास्ते में तेल बहते-बहते गर्म भी होता जाता है। चिमनी के नीचे पहुंच कर उसे और गर्मी देते हैं। कुछ ही देर में भाप उठने लगती है।

"चिमनी के अंदर कई भाग होते हैं। हरएक भाग में भाप ठंडी करने के यंत्र लगे रहते हैं। चिमनी के सबसे ऊपर के भाग में पेट्रोल बनता है। वह भाग चिमनी का सबसे ठंडा भाग होता है। इसके नीचे ठंड ज़रा कम होती है। यहां की भाप ठंडी होकर मिट्टी का तेल बनती है। इसी तरह इसके नीचे गैस आयल और डीज़ल आयल बनते हैं। अंत में भट्टी में झोंकने वाला तेल और बिटूमन बच रहता है।"

एक आदमी ने बाबू को टोककर कहा, "यह बिटूमन क्या बला होती है, बाबूजी ?"

"बिटूमन कोलतार का दूसरा नाम है। इससे सड़कें बनती हैं। तिरपाल बनते हैं। बरखा में पहनकर बाहर जानेवाले कोट बनते हैं।"

एक चश्मेवाला आदमी बोला, "मैं एक बात पूछना चाहता हूं।"

बाबू ने कहा, "शंकर से पूछिए।"

R.B.A.S.H. LIBRARY
B 2
4160
U.D.C No:
Date; 14-3-83

चश्मेवाले आदमी ने कहा, "आप कहते हैं, सबसे ऊपर की भाप पेट्रोल बनाती है। अगर सारी भाप नीचे ही ठंडी हो जाय, तो पेट्रोल एक बूंद भी न बनेगा?"

बाबू ने कहा, आपने खूब याद दिलाया। इस चीज का प्रबंध भी चिमनी ही में है। एक चीज़ है जिसे 'बुलबुला टोपी' कहते हैं। इस चीज़ की मदद से केवल वह भाप नीचे रहती है, जो उस ठंड में तेल बन सके। बाक़ी भाप बुलबुला बनकर तेल के ऊपर तैर आती है। फिर बुलबुला फूट जाता है। भाप उड़कर ऊपर पहुंच जाती है। इस तरह तेल की तीन बार सफाई होती है। तब जाकर तेल तैयार होता है। फिर पेट्रोल को और अच्छा बनाने के लिए उसमें दवाइयाँ मिलाते हैं।"

"कच्चे तेल में से कितना पेट्रोल निकल जाता है?" साहजी ने पूछा।

बाबू ने कुछ देर हिसाब लगाया। फिर बोला, "सात बोतल कच्चा तेल हो तो पहले-पहल सफाई कर के एक बोतल पेट्रोल निकला करता था। मगर अब नए तरीके निकले हैं। कच्चे तेल को खूब गर्म करते हैं। उसपर दबाव डालते हैं। उसमें दवा मिलाकर उसे फाड़ते हैं। बस, इस तरह सात बोतल कच्चे तेल में से

पौने दो बोतल पेट्रोल निकल आता है।"

"बहुत कम निकलता है !" साहजी ने कहा।

"कम नहीं, ज्यादा निकलता है। पहले इतना पेट्रोल निकालने की बात कोई सोचता भी नहीं था। अब रोज निकलता है।"

यह कह कर बाबू आगे बढ़ा।

बड़ी चिमनी के चारों ओर पाइपों का जाल बिछा हुआ था। तीन आदमियों की ऊंचाई तक पाइप-ही-पाइप थे। सब इनके बीच में से गुजर रहे थे। बाबू आगे था, लोग पीछे-पीछे। बहुत देर चलने के बाद लोहे की सीढ़ियां आईं। उनपर चढ़े तो एकाएक गर्मी बढ़ गई। रुककर बाबू ने कहा, "वह सबसे ऊपर चिमनी के साथ लगा हुआ पाइप है न? वहां की भाप का ही पेट्रोल बनता है।"

राघो ने कहा, "आज कारखाना बंद है क्या ?"

बाबू ने कहा, "नहीं, कारखाना तो चल रहा है। इस चिमनी में इस समय तेल बन रहा है, वरना यहां इतनी गर्मी क्यों होती ?"

"तो मशीनों की आवाज क्यों नहीं आती ?"

"तेल का कारखाना ऐसा ही होता है। इसकी कोई मशीन हिलती नहीं है। बस, तेल गर्म होता है,

साफ होता है, जमा होता है ।"

: ३ :

इसके बाद वे सब एक दरवाजे में घुसे। बहुत बड़ा कमरा था। जगह-जगह कारीगर खड़े थे। मशीनों के पहिए हिला रहे थे। पसीना पोंछ रहे थे। मशीनों की सुइयों को घटा-बढ़ा रहे थे। हवा में अजीब-सी थर्राहट थी।

जिधर देखो, पाइप-ही-पाइप और गर्मी-ही-गर्मी। राघो घबरा गया। बोला, "मैं बाहर जाता हूँ। मुझे यहां अच्छा नहीं लगता।"

इस तरह एक-एक करके उन्होंने कई मशीन-घर देख डाले। मगर राघो बाहर ही रहा। उसे यह सब अच्छा नहीं लगता। मशीनें देखकर उसका जी घुटने लगता था।

आखिर सब थक गए। बाबू ने कहा, "अब चलो, उस सामने के मकान में। वहां तेल की जांच की जाती है।

कारखाने के बाद साफ़-सुथरे ठंडे मकान में पहुँचे। सबकी जान-में-जान आई।

चारों तरफ खामोशी थी। दाएं-बाएं लंबा बरामदा था। एक तरफ खिड़कियां थीं। दूसरी तरफ

कमरों के दरवाजे थे। कितने ही दरवाजे ! और हर दरवाजे पर अंग्रेजी में कुछ लिखा हुआ था।

बाबू ने कहा, "आप यहीं रहिए। मैं अभी आया।" इतना कहकर वह एक कमरे में चला गया।

राघो ने कहा, "देखो, कैसा चमकदार फर्श है।"

इतने में दूर का एक दरवाजा खुला। साहजी कुछ कहते-कहते रुक गए। एक आदमी कमरे से बाहर निकला। उसने सफेद लबादा पहन रखा था। उसकी आंखों पर चश्मा था और हाथ में कांच की एक शीशी थी। एक पल उसने इन लोगों की तरफ देखा। फिर आगे बढ़ा। राघो डर गया। साहजी भी कुछ अचकचाये। कुछ कदम आगे आकर वह आदमी रुका। फिर मुड़कर एक कमरे में चला गया।

सबकी जान-में-जान आई।

इतने में बाबू बाहर आया। बोला, "आइए, मेरे साथ आइए।"

सब लोग बाबू के पीछे हो लिये। अंदर गए तो देखा एक बहुत बड़ा कमरा था। दीवारों के पास लंबी-लंबी मेजें थीं। उनके पीछे कई आदमी लबादे पहने खड़े थे। वे शीशियां हिला रहे थे। एक शीशी का तेल दूसरी शीशी में डाल रहे थे। उसे गर्म कर

रहे थे।

बाबू ने कहा, "यहां तैयार तेल की जांच होती है। हर घंटे के बाद तेल का एक नमूना लिया जाता है। उसे देखा जाता है कि उसमें सभी चीजें ठीक मात्रा में हैं या नहीं ? जांच के ठीक उतरने पर तेल को बेचने के लिए भेजा जाता है, वरना उसे फिर ठीक किया जाता है।"

इसके बाद बाबू उन्हें चाय पिलाने ले गया। खाना खाने के लिए पूरी-की-पूरी एक अलग इमारत थी। एक बहुत हवादार स्वच्छ कमरे में बैठकर उन्होंने चाय पी। लोहे की मेजें थीं, लोहे की कुर्सियां। बैरों ने सफेद वर्दी पहन रखी थी। बाबू ने बताया, "कारखाने के सब लोग यहां आकर खाना खाते हैं, चाय पीते हैं, विश्राम के समय में आराम करते हैं।"

चश्मेवाले आदमी ने कहा, "क्यों बाबूजी, तेल को रेल से भेजने में बहुत खर्च आता होगा ?"

बाबू ने चाय का एक घूंट पिया। बोला, "वे सामने की टंकियां आप देख रहे हैं न ?"

सबने शीशे की खिड़की से बाहर देखा। जिस तरफ बाबू इशारा कर रहा था, वहां बहुत सारी टंकियाँ थीं।

बाबू ने कहा, "साफ होकर तेल उनमें जमा होता है। इस तेल को टंकियोंवाली मालगाड़ियों में भरते हैं। बस, तेल पूना पहुंच जाता है। बड़ौदा पहुंच जाता है। झांसी पहुंच जाता है। नागपुर पहुंच जाता है। इलाहाबाद और बनारस पहुंच जाता है। पटना पहुंच जाता है। दिल्ली पहुंच जाता है। कलकत्ता पहुंच जाता है। जहां भी रेल जाती है, वहीं पहुंच जाता है।

"टंकी वाली लारियां भी आपने देखी होंगी? ये लारियां स्टेशनों पर आती हैं। जहां रेल नहीं जाती, वहाँ लारी जाती है। लारी में भरकर तेल शहर की हर दूकान में पहुंच जाता है। कस्बा-कस्बा में पहुंच जाता है। गांव-गांव में पहुंच जाता है। बाबू लोगों के घरों में, गरीबों की झोंपड़ियों में, सब जगह पहुंच जाता है। शाम होती है तो घर-घर में लालटेनें और लैंप निकलते हैं। चिमनी की सफाई होती है, तेल भरा जाता है। आंगन में गाय रंभाती है। बैल डकारता है। अंदर घर की मालकिन बत्ती उजियारती है। अंधेरे में प्रकाश फैल जाता है। इस प्रकाश में मालकिन खाना बनाती है। बच्चे पढ़ते हैं। बच्चों का बाप लेटकर आराम करता है। सारे दिन की थकान उतारता है।"

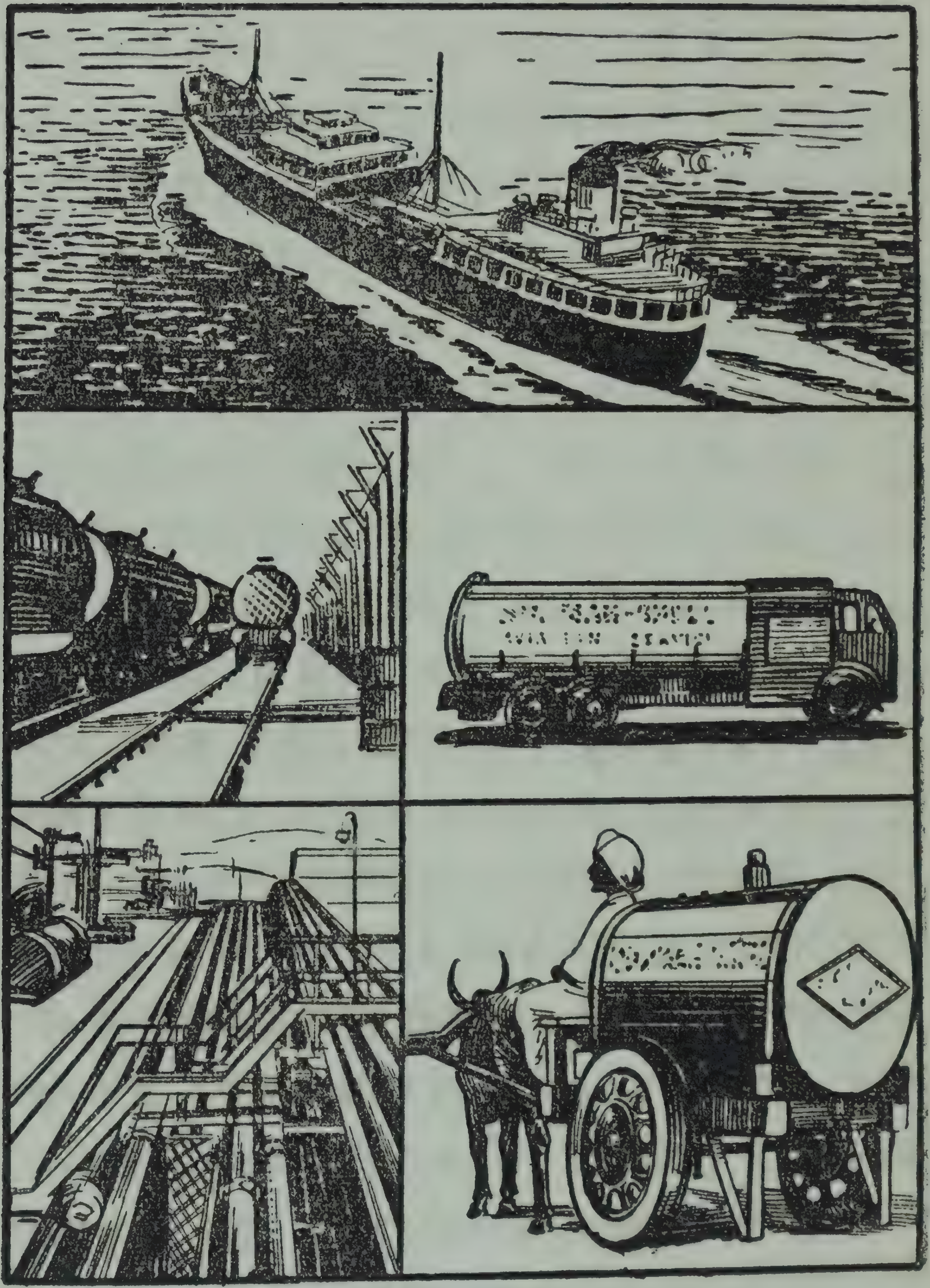

विभिन्न स्थानों पर तेल पहुँचाने के साधन

"रेल से तेल ले जाने का खर्च कितना आता है ?" चश्मेवाले ने फिर पूछा।

"तेल को पानी से ले जाना सबसे सस्ता पड़ता है, तेल को जहाज की टंकियों में भरा और ले गए। मगर पानी सब जगह नहीं होता। सो और तरीकों की जरूरत होती है। इससे कुछ महंगा तरीका पाइप का है, मगर पाइपों को हजारों मील बिछाना बहुत मुश्किल काम है। फिर इसकी तोड़-फोड़ का भी बहुत डर रहता है। इसलिए ज्यादातर तेल को रेल से ले जाते हैं। सबसे महंगा तरीका है लारी से ले जाने का। एक टन तेल को एक मील दूर ले जाने का खर्च देखिए। पानी से ले जायं तो एक पाई खर्च आता है। पाइप से ले जायं तो चार पाई। रेलगाड़ी से ले जायं तो एक आना चार पाई। लारी से ले जायं तो साढ़े चार आने।"

"बाप रे बाप !" राघो ने कहा। "लारी तो बड़ी महंगी पड़ती है !"

चश्मेवाले आदमी ने पूछा, "बाबूसाहब, एक टन तेल कितना होता है ?"

बाबू ने जवाब दिया, "दो सौ बावन गैलन तेल का एक टन होता है और एक गैलन में छः बोतलें होती हैं।"

चाय पी कर सबने विदा ली ।

: ४ :

वहाँ से साहजी सीधे अपनी दुकान पर पहुँचे। आते ही बिशन दिखाई दिया। उसे पकड़ कर बैठ गए। बोले, "आ, तुझे बताऊँ, मिट्टी का तेल कैसे निकलता है ?"

धन्नू काका भी बीड़ी फूँकते आ गए। बोले, "कहो, साहजी, देख आये कारखाना ?"

साहजी का चेहरा खिल उठा। मुस्कराकर बोले, "हाँ, भैया ! आओ, तुम भी सुन लो कि तेल कैसे बनता है ?"

साहजी ने खूब प्रेम से सबकुछ सुनाया। नमक-मिर्च लगाकर सुनाया। पंडितों की तरह उंगली हिला कर सुनाया।

बिशन ने मन से सुना। सुन चुका तो ताली बजा कर घर की तरफ भागा। वह मां को सुनायगा। बाबा को सुनायगा। सबको सुनायगा कि तेल कैसे बनता है। मिट्टी का तेल और पेट्रोल। मशीन का तेल और सड़क बनानेवाला कोलतार।

और हां ! वह अपने स्कूल के साथियों से पूछेगा, "भला बताओ तो मोमबत्ती कैसे बनती है ?" किसी से जवाब नहीं बनेगा । तब वह क़हेगा, "पेड़ा खिलाओ तो बताऊंगा ! लड्डू खिलाओ तो बताऊंगा ! बरफ़ी खिलाओ तो बताऊंगा !"

कोई-न-कोई तो जरूर उसे मिठाई खिलायगा ।

●

R. B. A. N. M. S. HIGHER SEC SCHOOL
Acci No ....
Sec No ....
:: BANGALORE. ::

'मंडल' द्वारा प्रकाशित प्राप्य साहित्य

गांधीजी लिखित

प्रार्थना प्रवचन (भाग १)	३)
,, ,, (भाग २)	२॥)
गीता-माता	४)
पंद्रह अगस्त के बाद	१॥), २)
धर्मनीति	१॥), २)
द० अफ्रीका का सत्याग्रह	३॥)
मेरे समकालीन	५)
आत्मकथा	४)
आत्म संयम	३)
गीता-बोध	॥)
ग्राम-सेवा	।=)
मंगल-प्रभात	।=)
सर्वोदय	।=)
नीति-धर्म	।=)
आश्रमवासियों से	।=)
हमारी मांग	१)
सत्यवीर की कथा	।)
संक्षिप्त आत्मकथा	१)
हिंद-स्वराज्य	॥।)
अनीति की राह पर	१)
बापू की सीख	॥)
गांधी-शिक्षा (तीन भाग)	१=)
आज का विचार (दो भाग)	॥।)
ब्रह्मचर्य (दो भाग)	१॥।)
गांधीजी ने कहा था भाग ५	१।)

विनोबाजी की लिखी

विनोबा-विचारः २ भाग	३)
गीता-प्रवचन	१॥)
शान्ति-यात्रा	१॥)
जीवन और शिक्षण	२)
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	१)
उपनिषदों का अध्ययन	१)
ईशावास्यवृत्ति	॥।)
ईशावास्योपनिषद	=)
सर्वोदय-विचार	१=)
स्वराज्य-शास्त्र	॥।)
भू-दान-यज्ञ	।)
गांधीजी को श्रद्धांजलि	।=)
राजघाट की संनिधि में	॥=)
विचार-पोथी	१)
सर्वोदय का घोषणा-पत्र	।)
जमाने की मांग	=)

नेहरू की लिखी

मेरी कहानी	८)
हिन्दुस्तान की समस्याएं	२॥)
लड़खड़ाती दुनिया	२)
राष्ट्रपिता	२)
राजनीति से दूर	२)
हमारी समस्यायें (२भाग)	१)
हिन्दुस्तान की कहानी सं०	५)

अन्य लेखकों की

आत्मकथा (राजेन्द्र बाबू)	८)
गांधीजी की देन	१॥)
गांधी-मार्ग	=)
महाभारत-कथा (राजाजी)	५)
कुब्जा सुन्दरी ,,	२)
शिशु-पालन ,,	॥)
मैं भूल नहीं सकता	२॥)
कारावास-कहानी (सु.नै.)	१०)
गांधी की कहानी (लु.फि.)	४)
भारत-विभाजन की कहानी	४)
इंग्लैंड में गांधीजी	२)
बा, बापू और भाई	॥)
गांधी-विचार-दोहन	१॥)
गांधी अभिनंदन ग्रंथ	४)
गांधी श्रद्धांजलि ग्रंथ	३)
अहिंसा की शक्ति (ग्रेग)	१॥)

R.B.A.N.M'S H.S (M) LIBRARY
B lore-42

सत्य

बुद्ध (... हरि) १)
सन्त सुधासार (वि. हरि) ११)
संतवाणी „ १।।)
प्रार्थना „ ।।)
अयोध्याकाण्ड „ १)
भागवत-धर्म (ह. उ.) ६।।)
श्रेया र्जी जमनालालजी „ ६।।)
स्वत ना की ओर „ ४)
बापू श्रम में „ १)
मान रने (माव.) १।।)
बापू (घ. बिड़ला) २)
रूप „ ।।=)
डायर „ १)
ध्रुवो यान „ ।)
स्त्री पुरुष (टाल्स्टाय) १)
मेरी मुक्ति की कहानी „ १।।)
प्रेम में भगवान „ २)
जीवन-साधना „ १।)
कलवार की करतूत „ ।)
हमारे जमाने की गुलामी „ ।।।)
बुराई कैसे मिटे ? „ १)
बालकों का विवेक „ ।।।)
हम करें क्या ? „ ३।।)
धर्म और सदाचार „ १।)
अंधेरे में उजाला „ १।।)
कल्पवृक्ष (वा० अग्रवाल) २)
हिमालय की गोद में २)
साहित्य और जीवन २)
कब्ज (म० प्र० पोद्दार) १)
राजनीति प्रवेशिका १)
जीवन-संदेश (ख.जिब्रान) १।)
अशोक के फूल ३)
जीवन-प्रभात ५)
तुकाराम गाथासार १।।)

२०)
पंचदशी (स) १।।)
सप्तदशी २)
रीढ़ की हड्डी १।।)
अमिट रेखायें ३)
एक आदर्श महिला १)
राष्ट्रीय गीत ।)
तामिल-वेद (तिरुकुरल) १।।)
आत्म-रहस्य ३)
थेरी-गाथाएं १।।)
बुद्ध और बौद्ध साधक १।।)
जातक-कथा (आनंदकौ.) २।।)
हमारे गांव की कहानी १।।)
साग-भाजी की खेती ३)
पशुओं का इलाज (प.प्र.) ।।)
रामतीर्थ-संदेश (३ भाग) १=)
रोटी का सवाल (क्रोपा.) ३)
नवयुवकों से दो बातें „ ।=)
पुरुषार्थ (डा. भगवान्दास) ६)
काश्मीर पर हमला २)
शिष्टाचार ।।)
भारतीय संस्कृति ३।।)
आधुनिक भारत ५)
फलों की खेती २।।)
मैं तन्दुरुस्त हूं या बीमार ।।।)
नवजागरण का इतिहास ३)
गांधीजी की छत्र छाया में २।।)
भागवत-कथा ३।।)
जय अमरनाथ १।।)
प्रगति के पथ पर (६ भाग) १।।)
संस्कृत-साहित्य-सौरभ
(२८ पुस्तकें) प्रति पुस्तक ।=)
समाज-विकास-माला
(५८ पुस्तकें) प्रति पुस्तक ।=)

R. B. A. N. M'S

High School (Main) Library

BOOK CARD

Author ......कुलभूषण.......

Title......तक की कहानी.......

....

Account No. ......4160......

Class No ......8-3s(KUL)N57......

Name of the Borrower	Card No.	Due Date

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी -जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तन्दुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संतज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिलजुल कर काम करो
५७. काला पानी
५८. पावभर आटा

मूल्य प्रत्येक का छः आना

R.B.N.M's High School (Main) LIBRARY

छः आना